INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 2 | MARCH – 2026

रीवा जिले में ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक निर्णय–निर्माण में भूमिका और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन

रेखा सोनी
शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर.के. सोनी
प्राध्यापक समाजशास्त्र, पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से परिवार की देखभाल, घरेलू कार्यों के निर्वहन तथा बच्चों के पालन–पोषण तक सीमित मानी जाती रही है। सामाजिक संरचना में प्रचलित पितृसत्तात्मक व्यवस्था तथा रूढ़िवादी मान्यताओं के कारण महिलाओं की सहभागिता सार्वजनिक एवं निर्णयात्मक क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम रही। वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिवर्तनों के प्रभाव से ग्रामीण महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित होने लगा है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाएँ अब पारिवारिक जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों–जैसे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी व्यवस्थाएँ, कृषि कार्यों में भागीदारी, पारिवारिक आय–व्यय का प्रबंधन तथा सामाजिक– सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय एवं प्रभावशाली भूमिका निभाने लगी हैं। इसके साथ ही महिलाओं में आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक चेतना का स्तर भी क्रमशः विकसित हो रहा है। ग्रामीण समाज में अभी भी कुछ पारंपरिक मान्यताएँ, लैंगिक असमानता तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना महिलाओं की पूर्ण एवं स्वतंत्र सहभागिता में बाधा उत्पन्न करती हैं, तथापि यह स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सतत् गतिशील है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा, संगठनात्मक सहभागिता तथा सरकारी हस्तक्षेपों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक एवं सामाजिक भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में निरंतर प्रगति हो रही है।

मुख्य शब्द – ग्रामीण महिला, पारिवारिक निर्णय–निर्माण, सामाजिक परिवर्तन, सशक्तिकरण, शिक्षा एवं जागरूकता।

प्रस्तावना –

भारतीय समाज की संरचना में परिवार एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जो व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन की आधारशिला मानी जाती है। परिवार के भीतर ही व्यक्ति का प्रारंभिक समाजीकरण होता है तथा जीवन के अनेक मूल्यों, परंपराओं और व्यवहारों का विकास होता है। परिवार के माध्यम से ही व्यक्ति समाज के नियमों, कर्तव्यों और अधिकारों को समझता है। इस प्रकार परिवार केवल एक जैविक इकाई नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन के रूप में भी कार्य करता है।[1]

परिवार में विभिन्न प्रकार के निर्णय लिए जाते हैं, जिनमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य संबंधी तथा सांस्कृतिक निर्णय प्रमुख होते हैं। बच्चों की शिक्षा, विवाह, संपत्ति के उपयोग, आय–व्यय के प्रबंधन, कृषि या व्यवसाय से संबंधित गतिविधियाँ तथा सामाजिक संबंधों से जुड़े निर्णय प्रायः परिवार के स्तर पर ही निर्धारित किए जाते हैं। इन निर्णयों के माध्यम से परिवार की दिशा, संरचना तथा विकास की प्रक्रिया प्रभावित होती है। अतः यह आवश्यक है कि परिवार के सभी सदस्यों की भूमिका एवं सहभागिता को उचित महत्व दिया जाए, जिससे निर्णय अधिक संतुलित, व्यावहारिक तथा प्रभावी बन सकें।[2]

पारंपरिक भारतीय ग्रामीण समाज में निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया मुख्यतः पुरुष प्रधान रही है। समाज की पितृसत्तात्मक संरचना के कारण परिवार के मुखिया के रूप में पुरुषों को अधिक अधिकार तथा निर्णयात्मक शक्ति प्राप्त रही है। अधिकांश ग्रामीण परिवारों में आर्थिक संसाधनों, संपत्ति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा पर पुरुषों का नियंत्रण रहा है, जिसके कारण निर्णय लेने की शक्ति भी मुख्यतः उन्हीं के हाथों में केंद्रित रही। महिलाओं को प्रायः परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों से दूर रखा जाता था और उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे केवल घरेलू कार्यों का निर्वहन करें।[3]

महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थी। घर की देखभाल, भोजन की व्यवस्था, बच्चों का पालन–पोषण, बुजुर्गों की सेवा तथा अन्य घरेलू दायित्वों को ही महिलाओं का प्रमुख कार्य समझा जाता था। यद्यपि ये कार्य परिवार के संचालन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, फिर भी सामाजिक मान्यता और निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं को समान स्थान प्राप्त नहीं हो पाता था। परिणामस्वरूप महिलाएँ परिवार के भीतर महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति में बनी रहती थीं।[4]

ग्रामीण समाज में प्रचलित सामाजिक मान्यताएँ और परंपराएँ भी महिलाओं की सीमित भूमिका के लिए काफी हद तक जिम्मेदार रही हैं। अनेक समुदायों में यह धारणा प्रचलित रही कि पुरुष ही परिवार का वास्तविक संरक्षक और प्रमुख निर्णयकर्ता होता है, जबकि महिलाओं को सहायक भूमिका तक ही सीमित रहना चाहिए। इस प्रकार की सामाजिक सोच के कारण महिलाओं की शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता के अवसर भी सीमित रहे, जिससे उनकी निर्णय–निर्माण क्षमता का पर्याप्त विकास नहीं हो सका।[5]

समय के साथ सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया ने इस स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन लाना प्रारंभ किया है। शिक्षा का प्रसार, संचार माध्यमों का विकास, सरकारी योजनाओं की उपलब्धता तथा महिला सशक्तिकरण से संबंधित जागरूकता ने महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ किया है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी कर रही हैं तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़कर अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप परिवार के भीतर उनकी भूमिका और महत्व में भी वृद्धि हुई है।[6]

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अनेक ग्रामीण परिवारों में महिलाएँ पारिवारिक निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू बजट, कृषि कार्यों तथा सामाजिक कार्यक्रमों से संबंधित निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ रही है। यह परिवर्तन ग्रामीण समाज में सामाजिक विकास तथा लैंगिक समानता की दिशा में एक सकारात्मक संकेत माना जा सकता है।[7]

मध्य प्रदेश के रीवा जिले में भी हाल के वर्षों में महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में परिवर्तन देखा गया है। महिलाएँ अब केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि कृषि, लघु व्यवसाय तथा सामुदायिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप परिवार में उनकी भूमिका और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।[8]

पारिवारिक निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। जब महिलाएँ परिवार के निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, तो इससे उनके आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।[9] अतः ग्रामीण महिलाओं की निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में भूमिका का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

विश्लेषण

रीवा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ रही है। पहले जहाँ परिवार के अधिकांश महत्वपूर्ण निर्णय पुरुषों द्वारा ही लिए जाते थे, वहीं वर्तमान समय में महिलाएँ भी इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने लगी हैं। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया, शिक्षा का प्रसार तथा सरकारी योजनाओं की उपलब्धता ने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास और जागरूकता को बढ़ाया है। इसके परिणामस्वरूप महिलाएँ परिवार के विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार रखने लगी हैं और उनकी राय को भी महत्व दिया जाने लगा है।

शिक्षा को ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारक माना जा सकता है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। रीवा जिले के अनेक गाँवों में यह देखा गया है कि जिन परिवारों में महिलाएँ शिक्षित हैं, वहाँ वे परिवार के निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। शिक्षा के कारण महिलाओं में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का विकास होता है, जिससे वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाती हैं।

परिवार के आर्थिक निर्णयों में भी महिलाओं की भूमिका धीरे–धीरे मजबूत होती जा रही है। पहले आय–व्यय का प्रबंधन, कृषि संबंधी निर्णय तथा आर्थिक योजनाएँ पुरुषों के नियंत्रण में होती थीं, किंतु अब महिलाएँ भी इन गतिविधियों में भाग लेने लगी हैं। कई ग्रामीण परिवारों में महिलाएँ घरेलू बजट के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा परिवार की आर्थिक स्थिति को संतुलित बनाए रखने में सहयोग करती हैं।

कृषि कार्यों में भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। रीवा जिले के अधिकांश ग्रामीण परिवार कृषि पर निर्भर हैं और कृषि कार्यों में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाएँ खेतों में बीज बोने, निराई–गुड़ाई, फसल की कटाई तथा पशुपालन जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब महिलाएँ कृषि कार्यों में सक्रिय रूप से योगदान देती हैं, तो स्वाभाविक रूप से कृषि संबंधी निर्णयों में भी उनकी सहभागिता बढ़ती है।

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। रीवा जिले के कई गाँवों में महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर बचत और ऋण की गतिविधियों में भाग ले रही हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाएँ छोटे–मोटे व्यवसाय प्रारंभ कर रही हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी मजबूत होती है और परिवार के निर्णयों में उनकी भूमिका बढ़ जाती है।

परिवार के सामाजिक और सांस्कृतिक निर्णयों में भी महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है। विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों तथा सामाजिक कार्यक्रमों से संबंधित निर्णयों में अब महिलाओं की राय भी ली जाने लगी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन हो रहा है और उन्हें परिवार की महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

स्वास्थ्य और शिक्षा से संबंधित निर्णयों में महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गई है। महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, टीकाकरण, पोषण तथा स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े निर्णयों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। कई अध्ययन यह दर्शाते हैं कि जिन परिवारों में महिलाएँ निर्णय–निर्माण में भाग लेती हैं, वहाँ बच्चों का स्वास्थ्य और शिक्षा स्तर बेहतर होता है।

ग्रामीण समाज में पितृसत्तात्मक परंपराएँ अभी भी गहराई से विद्यमान हैं। कई परिवारों में महिलाओं की भूमिका अभी भी सीमित है और उन्हें महत्वपूर्ण निर्णयों में भाग लेने का अवसर कम मिलता है। बुजुर्गों की पारंपरिक सोच, सामाजिक मान्यताएँ तथा आर्थिक निर्भरता जैसी समस्याएँ महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसके कारण कुछ क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन की गति अपेक्षाकृत धीमी दिखाई देती है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर जारी है। शिक्षा, मीडिया, सरकारी योजनाएँ तथा सामाजिक संगठनों की सक्रियता ने ग्रामीण महिलाओं को अधिक जागरूक और आत्मनिर्भर बनाया है। रीवा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि भविष्य में पारिवारिक निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका और अधिक सशक्त होगी, जो समाज के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रीवा जिले के ग्रामीण समाज में महिलाओं की पारिवारिक निर्णय–निर्माण में भूमिका धीरे–धीरे सशक्त हो रही है। शिक्षा के प्रसार, आर्थिक अवसरों की उपलब्धता तथा सामाजिक जागरूकता के कारण महिलाएँ अब परिवार के विभिन्न निर्णयों में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं। इससे न केवल उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बल मिला है, बल्कि परिवार और समाज के समग्र विकास में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कुछ पारंपरिक मान्यताएँ और सामाजिक बाधाएँ अभी भी महिलाओं की पूर्ण सहभागिता में अवरोध उत्पन्न करती हैं, किंतु बदलते सामाजिक परिवेश में इन बाधाओं में धीरे–धीरे कमी आ रही है। अतः यह आवश्यक है कि महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए सरकार और समाज द्वारा निरंतर प्रयास किए जाएँ, जिससे ग्रामीण महिलाओं की निर्णय–निर्माण में भूमिका और अधिक सशक्त हो सके।

संदर्भ –

[1] मैकाइवर एवं पेज – समाजशास्त्र, आगरा : साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2010, पृष्ठ 285
[2] ओगबर्न एवं निमकॉफ – समाजशास्त्र, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन, 2008, पृष्ठ 312
[3] ए.आर. देसाई – भारतीय समाज की संरचना, मुंबई : पॉपुलर प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 198
[4] एम.एन. श्रीनिवास – आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली : ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2012, पृष्ठ 145
[5] राम आहूजा – भारतीय समाज, जयपुर : रावत पब्लिकेशन, 2011, पृष्ठ 223
[6] योगेन्द्र सिंह – भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन, 2009, पृष्ठ 167
[7] नीरा देसाई – भारतीय समाज में महिला, मुंबई : पॉपुलर प्रकाशन, 2003, पृष्ठ 92
[8] भारत सरकार महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, महिला सशक्तिकरण रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 54
[9] एस.सी. दुबे – भारतीय ग्राम, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, 2007, पृष्ठ 121